एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मृदा की समृद्धता बनाए रखने के लिए कुछ महत्वपूर्ण जैविक उपाय

(*अमन दीक्षित, संजू कुमारी एवं अनुराग वर्मा)
चंद्र भानु गुप्त कृषि महाविद्यालय, बक्शी का तालाब, लखनऊ
*संवादी लेखक का ईमेल पता: amandixit12july@gmail.com

भारत वर्ष में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है और कृषकों की मुख्य आय का साधन खेती है। हरित क्रांति के समय से बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुए एवं आय की दृष्टि से उत्पादन बढ़ाना आवश्यक है। अधिक उत्पादन के लिये खेती में अधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरको एवं कीटनाशक का उपयोग करना पड़ता है जिससे सामान्य व छोटे कृषक के पास कम जोत मे अत्यधिक लागत लग रही है और जल, भूमि वायु और वातावरण भी प्रदूषित हो रहा है साथ ही खाद्य पदार्थ भी जहरीले हो रहे है। इसलिए इस प्रकार की उपरोक्त सभी समस्याओं से निपटने के लिये गत वर्षो से निरन्तर टिकाऊ खेती के सिध्दान्त पर खेती करने की सिफारिश की गई, जिसे प्रदेश के कृषि विभाग ने इस विशेष प्रकार की खेती को अपनाने के लिए बढ़ावा दिया जिसे हम जैविक खेती के नाम से जानते है। भारत सरकार भी इस खेती को अपनाने के लिए प्रचार-प्रसार कर रही है।

परिभाषा:- खेती की वह आधुनिकतम प्रणाली जिसमें खेती की कुल लागतों में से रसायनों का पूर्ण बहिष्कार किया जाता है जैविक खेती कहलाता है।

मृदा की समृद्धता बनाए रखने के उद्देश्य से कुछ जैविक उपायों को बताया जा रहा है-

जीवामृत:-10 किलो ग्राम गाय का गोबर, 10 लीटर गौमूत्र, 2 किलो ग्राम गुड़ तथा किसी दाल का आटा +1 किलो ग्राम जीवंत मृदा को 200 लीटर पानी में मिलाकर 5 से 7 दिनों हेतु सड़ने के लिए रख दिया जाता है। नियमित रूप से दिन में तीन बार मिश्रण को हिलाते रहते हैं 1 एकड़ में सिंचाई जल के साथ प्रयोग करते हैं।

पंचगव्य:- 5 किलो ग्राम गाय का गोबर+ 3 लीटर गौमूत्र + 2 लीटर गाय का दूध + 2 लीटर दही+गाय के दूध से बना मक्खन एक किलो ग्राम 7 दिनों के लिए सड़ने के लिए रख दें और इसे रोज दिन में दो बार हिलाते रहे 7 से 8 दिन में तैयार हो जाएगा। 3 लीटर पंचगव्य को 100 लीटर पानी में मिला लें और मृदा पर छिड़क दें।

संजीवक:- 100 किलो ग्राम गाय का गोबर+ 100 लीटर गौमूत्र तथा 500 ग्राम गुड़ को, 500 लीटर क्षमता वाले ड्रम में 300 लीटर जल में मिलाकर 10 दिन हेतु सड़ने के लिए रख दें। 20 गुना पानी मिलाकर 1 एकड़ खेत में मृदा पर स्प्रे करें अथवा सिंचाई जल के साथ प्रयोग करें।